।। ग्रहभक्तियोगाध्यायः ।।

सूर्य के आधिपत्य के देश :

प्राङ् नर्मदार्द्धशोणोड्रवङ्गसुह्माः कलिङ्गबाह्लीकाः ।
शकयवनमगधशबरप्राग्ज्योतिषचीनकाम्बोजाः ।। 1 ।।
मेकलकिरातविटका बहिरन्तःशैलजाः पुलिन्दाश्च ।
द्रविडानां प्रागर्द्धं दक्षिणकूलं च यमुनायाः ।। 2 ।।
चम्पोदुम्बरकौशाम्बिचेदिविन्ध्याटवीकलिङ्गाश्च ।
पुण्ड्रा गोलाङ्गूलश्रीपर्वतवर्द्धमानानि ।। 3 ।।
इक्षुमतीत्यथ तस्करपारतकान्तारगोपबीजानाम् ।
तुषधान्यकटुकतरुकनकदहनविषसमरशूराणाम् ।। 4 ।।
भेषजभिषक्चतुष्पदकृषिकरनृपहिंस्रयायिचौराणाम् ।
व्यालारण्ययशोयुततीक्ष्णानां भास्करः स्वामी ।। 5 ।।

नर्मदा नदी का पूर्वार्ध, सोन नदी, उड्र जनपद, वंग, सुह्म, कलिंग, शक, यवन, मगध, शबर देश, प्राग्ज्योतिषपुर (असम) चीन, काम्बोज।

मेकल पर्वत (नर्मदा नदी का उद्गम) किरात देश, विटक, बहिर्गिरि, अन्तर्गिरि अर्थात् सभी पर्वतों के भीतरी व बाहरी प्रदेश, पुलिन्द जनपद, द्रविड देश का पूर्वार्ध, यमुना नदी का दायाँ किनारा।

चम्पा पुरी (अंगदेश भागलपुर) उदुम्बर, कौशाम्बी, चेदि देश, विन्ध्याटवी, कलिंग, पुण्ड्र, गोलाङ्गूल देश (वानर जाति प्रदेश), श्रीपर्वत (आंध्र) वर्धमानपुर।

Scanned with CamScanner

इक्षुमती नदी (कुमायूँ की ईंधन नदी, गंगा की सहायक), तस्कर देश, घास, कान्तार (जंगली प्रदेश), गोपाल जाति, बीज पदार्थ, मोटे अनाज और भूसी निकालने से प्राप्त अनाज (गेहूँ, ज्वार, बाजरा, मोटे चावल), मिर्च आदि तीखे पदार्थ, पेड़, सोना, अग्नि पदार्थ, विषैले पदार्थ एवं रासायनिक पदार्थ, घोड़ा या सैनिक बल, चिकित्सा, चिकित्सक, खेती, पशु, राजा, हिंसक लोग, आक्रामक स्वभाव वाले या युद्ध में प्रहार करने वाले लोग, चोर, सर्प, निर्जन देश, प्रसिद्ध लोग, तीखे पदार्थ या तीक्ष्ण नायक प्रदेश।

इन सब स्थानों व पदार्थों का स्वामी सूर्य है। इस सूची में न्यूनाधिक सभी चीजें आ गई हैं। समान प्रकृति, शील व स्वभाव वाली चीजों को भी स्वयं समझ लेना चाहिए। ग्रहों का कारकत्व इसी आधार पर उत्तरकालामृत में भी दिया गया है। सब आचार्यों के आधार ऋषियों के वचन ही हैं। देश प्रदेशों के विषय में पीछे विस्तार से लिख ही चुके हैं। उक्त विषय काश्यप की सूची से मिलता जुलता है। पुरुष (नर) जीव जन्तु, व बालक ये दो चीजें काश्यप ने अधिक कही हैं।

> अरण्यवासिव्याघ्राश्च कार्यकरा बालकाश्तथा।
> गौरवर्णं च किञ्चल्कं पुंसंज्ञा ये च जन्तवः।।
> सर्वेषां भास्करः स्वामी तेजस्तेजस्विनामपि।। (काश्यप)

चन्द्रमा के देश व पदार्थ :

> गिरिसलिलदुर्गकोशलभरुकच्छसमुद्रसोमकतुषाराः।
> धनवासितङ्गणहलस्त्रीराज्यमहार्णवद्वीपाः।। 6।।
> मधुररसकुसुमफलसलिलसकणमणिशङ्खमौक्तिकाश्वानाम्।
> शालियवौषधिगोधूमसोमपाकन्दविद्राणाम्।। 7।।
> सितसुभगतुरगरतिकरसुपतिषमूनाथभोज्यवस्त्राणम्।
> शृङ्गिनिशाचरकार्यकयज्ञविदां चाधिपश्चन्द्रः।। 8।।

किले, कोशल देश, भरुकच्छ, समुद्री भूभाग, रोमकपुरी या रोमदेश, तुषार देश, धनवासी देश, तंगण, हल, स्त्रीराज्य, समुद्र के बीच में पड़ने वाले सभी द्वीप।

मधुर रस के पदार्थ (सभी फल, फूल, खाद्य पदार्थ) जल, मनका, मणियुक्त, शंख, पानी से उत्पन्न पदार्थ, अच्छे अनाज, जौ, औषधियाँ, गेहूँ, पद्मकन्द, अंगोछायुक्त मध्यम बल वाले राजा, ब्राह्मण।

Scanned with CamScanner

सफेद रंग के पदार्थ, चाँदी, लोकप्रिय जन, घोड़े, सुन्दर व प्यारे जीव प्राणी, स्त्रियाँ, सेनापति, खाने के बने हुए पदार्थ, कपड़े, सींग वाले जानवर, रात्रिचर जीव, कृषिकर्त्ता, यज्ञवेत्ता– इन सबका अधिपति चन्द्रमा है।

रोम देश :

पीछे भारतवर्ष विचार के प्रसंग में रोमकपुरी का उल्लेख हो चुका है। यह रोमकपुरी वर्तमान में तो समुद्र में ही प्रतीत होती है। लेकिन उसके अतिरिक्त रोम (इटली) देश वैदिक काल से प्रसिद्ध है। महाभारत में 'रोम' का स्पष्ट उल्लेख है।

बानायवोदशापार्श्वा रोमाणः कुशबिन्दवः।

रोम से भारत के व्यापारिक सम्बन्ध थे। इस विषय में विद्वानों ने बहुत कुछ लिखा है।

मंगल के पदार्थ :

शोणस्य नर्मदाया भीमरथायाश्च पश्चिमार्द्धस्थाः।
निर्विन्ध्या वेत्रवती सिप्रा गोदावरी वेणा।। 9।।
मन्दाकिनी पयोष्णी महानदी सिन्धुमालतीपाराः।
उत्तरपाण्ड्यमहेन्द्राद्रिविन्ध्यमलयोपगाश्चोलाः।। 10।।
द्रविडविदेहान्ध्राश्मकभासापरकौङ्कणाः समन्त्रिषिकाः।
कुन्तलकेरलदण्डककान्तिपुरम्लेच्छसङ्करिणः।। 11।।
नागरकृषिकरपारतहुताशनाजीविशस्त्रवार्तानाम्।
आटविकदुर्गकर्वटवधिकनृशंसावलिप्तानाम्।। 12।।
नरपतिकुमारकुञ्जरदाम्भिकडिम्भाभिघातपशुपानाम्।
रक्तफलकुसुमविद्रुमचमूपगुडमद्यतीक्ष्णानाम्।। 13।।
कोशभवनाग्निहोत्रिकधात्वाकरशाक्यभिक्षुचौराणाम्।
शठदीर्घविरबह्वाशिनां च वसुधासुतोऽधिपतिः।। 14।।

शोण नदी, नर्मदा, भीमरथा नदियों से पश्चिमार्ध देश, निर्विन्ध्य नदी (मध्यप्रदेश), वेत्रवती (बेतवा) नदी, सिप्रा, गोदावरी, वेणा नदी। गंगा, महानदी, सिन्धु व मालती नदी, पारा नदी, उत्तर पाण्ड्यदेश, महेन्द्र पर्वत, विन्ध्य, मलय पर्वत, चोल देश।

Scanned with CamScanner

द्रविड़, विदेह, आन्ध्र, अश्मक, भासापर प्रदेश, कोंकण, समन्त्रियिक प्रदेश, कुन्तल देश, केरल, दण्डकवन, कान्तिपुर, म्लेच्छ, वर्णसंकर जातियाँ।

नागरिक लोग, किसान, पारत, अग्निजीवी लोग, शस्त्रजीवी, जंगली जातियाँ, किले, कर्वटपुर, कसाई, पापी लोग, चंचल मन वाले लोग।

राजा, बालक, हाथी, गर्वीले लोग, भ्रूण नाशकर्ता अथवा कठोर भाषण करने वाले, पशुपालक, लाल रंग के पदार्थ, मूँगा, सेनापति, गुड़, मदिरा, तीखे पदार्थ।

भण्डारगृह, अग्निहोत्र करने वाले, धातुओं का संग्रह व संस्कार करने वाले, लाल गेरुए वस्त्रों वाले या बौद्ध सन्यासी, भिक्षु, चोर, स्वार्थी व शठ लोग, लम्बी शत्रुता रखने वाले, अधिक खाने वाले– इन सबका स्वामी मंगल है।

भीमरथा (कृष्णा की सहायक भीमा नदी), महानदी (उड़ीसा के अन्तर्गत) निर्विन्ध्या (चम्बल की सहायक), शोण (पटना के पास), पयोष्णी (बुन्देलखण्ड), पाण (चम्बल की सहायक, नदी) हैं।

किसी प्रति में इस सूची में एक श्लोक अधिक मिलता है।

नासिक्यभोगवर्धनविराटविन्ध्याद्रिपार्श्वगा देशाः।
ये च पिबन्ति सुतोयां तापीं ये चापि गोमतीसलिलम्।।

'नासिक, भोगवर्धन, विराट, विन्ध्याचल का निकटवर्ती भूभाग, ताप्ती व गोमती के तीर प्रदेश भी मंगल के आधीन हैं।' भट्टोत्पल ने इस श्लोक पर टीका नहीं की है।

बुध के अधीन पदार्थ :

लोहित्यः सिन्धुनदः सरयूर्गाम्भीरिका रथाख्या च।
गङ्गाकौशिक्याद्याः सरितो वैदेहकाम्बोजाः।। 15।।
मथुरायाः पूर्वार्द्धं हिमवद्गोमन्तचित्रकूटस्याः।
सौराष्ट्रसेतुजलभार्गपप्यबिल्वपर्वताश्रयिणः।। 16।।
उदपानयन्त्रगान्धर्वलेख्यभणितागमन्थयुक्तिविदः।
आलेख्यशब्दगणितप्रसाधकायुष्यशिल्पज्ञाः।। 17।।
चरपुरुषकुहकजीवकशिशुकविशठसूचकाभिचारततः।
तूलनपुंसकहास्यज्ञभूततन्त्रेन्द्रजालज्ञाः।। 18।।
आरक्षकनटनर्तकधूर्ततैलस्नेहभीरुतिक्तानि।
व्रतचारिरसायनकुशलचेसराश्वरूपुवस्त्र।। 19।।

Scanned with CamScanner

लौहित्य (ब्रह्मपुत्र), सिन्धु नदी, सरयू, गभीरा (मध्य प्रदेशान्तर्गत) रथा, गंगा, कौशिकी (कोसी) नदी।

विदेह, काम्बोज, मथुरा का पूर्वार्ध, हिमालय, गोमन्त (सम्भवतः गोवर्धन) चित्रकूट पर्वत, सुराष्ट्र (सौराष्ट्र), पुल मार्ग, सड़क आदि मार्ग, पानी के रास्ते व यात्री बिक्री की चीजें, पर्वतवासी लोग, पानी के यन्त्र, गान विद्या, संगीत विद्या, लेखन, जौहरी (मणि परीक्षक), रंगने की विद्या के निष्णात, चित्रकार डिजायनर, गन्ध निर्माता, रेखाचित्र विशेषज्ञ, व्याकरण व भाषा के विशेषज्ञ, गणित विद्या, उक्त सब कार्य व ये कार्य करने वाले लोग, जीवन रक्षक कार्य करने वाले या जीवन रक्षक औषधि निर्माण, शिल्पी (कुशल मिस्त्री, दस्तकार आदि), जासूस, बनावटी अदाओं से जीवन निर्वाह करने वाले, वैद्य, कवि, शठ अर्थात् स्वार्थी लोग, चुगलखोर, खतरनाक तान्त्रिक क्रियाएँ करने वाले, सन्देश वाहक दूत, नपुंसक लोग, हँसने हँसाने वाले, उपहास कुशल लोग, भूतप्रेत सम्बन्धी क्रिया करने वाले, जादूगर, हाथ की सफाई दिखाने वाले, सुरक्षाधिकारी (पुलिस या अर्ध सैनिक बल), अभिनेता, नर्तक, घी, तेल, अन्य चिकने पदार्थ (स्नेह) अर्थात् तिल व सरसों के तेल के अलावा बादाम, अखरोट, मूंगफली आदि के तेल रिफाइन्ड तेल आदि, बीज, तीखे स्वाद वाले पदार्थ, व्रती नियमधारी लोग, रसायन (Chemicals) विशेषज्ञ, खच्चर आदि भार वाहक घोड़े (वेसर)– ये सब बुध के आधिपत्य में हैं।

गुरु का कारकत्व :

सिन्धुनदपूर्वभागो मथुरापश्चार्द्धभरतसौवीराः।
सुह्मौदीच्यविपाशासरिच्छतद्रू रमठशाल्वाः।। 20।।
त्रैगर्तपौरवाम्बष्ठपारता वाटधानयौधेयाः।
सारस्वतार्जुनायनमत्स्यार्द्धग्रामराष्ट्राणि।। 21।।
हस्त्यश्वपुरोहितभूपमन्त्रिमाङ्गल्यपौष्टिकासक्ताः।
कारुण्यसत्यशौचव्रतविद्यादानधर्मयुताः।। 22।।
पौरमहाधनशब्दार्थविदविदुषोऽभिचारनीतिज्ञाः।
मनुजेश्वरोपकरणं छत्रध्वजचामरार्घं च।। 23।।
शैलेयकुष्ठमांसीतगररससैन्धवानि वल्लीजम्।
मधुररसमधूच्छिष्टानि चोरकश्चेति जीवस्य।। 24।।

Scanned with CamScanner

सिन्धु नदी से पूर्व के प्रदेश (वर्तमान उत्तरी भारत) मथुरा का पश्चिमी आधा भाग, भरतदेश, सौवीर, सुघ्न, उत्तरी भारत, विपाशा (व्यास) नदी, शतद्रु नदी (सतलज) रमठ शाल्व देश।

त्रिगर्त, पौरव देश, अम्बष्ठ, पारत, वाटधान, यौधेय, सरस्वती नदी का प्रदेश, अर्जुनायन, मत्स्य देश का आधा भाग, हाथी, घोड़ा, पुरोहित व शास्त्रज्ञ लोग, राजा, मन्त्री, विवाहादि मंगल कार्यों में सहयोगी जन, दयालु पुरुष, सत्यवादी, पवित्र व सत्य आचरण करने वाले, व्रती तपस्वी, विद्वान् उच्च शिक्षित लोग, दानी व धार्मिक।

नागरिक लोग, बड़े धनाढ्य, शब्द व भाषा के विशेषज्ञ, अर्थ के विशेषज्ञ (आचार्य, व्याख्याता, निष्कर्ष दाता या अर्थ शास्त्री) वेद के विद्वान्, अभिचार (तान्त्रिक क्रियाएँ) में कुशल, नीति के जानकार, राजसी चीजें, छत्र, झंडा, ध्वज आदि, व्यजन चंवर आदि पहाड़ों पर पैदा होने वाली खुशबूदार चीजें, गेरु आदि कूट (जड़ी) मांसीतगर (खुशबूदार वनस्पति), नमक, साबुत दालें आदि, मीठे पदार्थ, मोम आदि सब पदार्थ बृहस्पति के अधीन हैं।

तगर :

अगर तगर अगर की तरह का खुशबूदार पदार्थ। कई रंगों में मिलता है। पिंड तगर व तगर इसके भेद हैं।

मांसी :

जटामांसी नाम से प्रसिद्ध है। त्वचा रोगों में काम आती है। बालछड़ नाम से भी मिलती है। बालछड़ भी कहते हैं।

शैलय :

पत्थर के फूल नाम से बिकता है। दवाओं में प्रयुक्त होता है। कमेला नाम प्रसिद्ध है।

कुष्ठ :

कूट नाम से प्रसिद्ध जड़ी है। कड़वा व मीठा दो तरह का होता है।

शुक्र का आधिपत्य :

तक्षशिलमर्तिकावतबहुगिरिगान्धारपुष्कलावतकाः।
प्रस्थलमालवकैकयदाशार्णोशीनराः शिबयः।। 25।।

Scanned with CamScanner

ये च पिवन्ति वितस्तामिरावतीं चन्द्रभागसरितं च।
रथरजताकरकुञ्जरतुरगमहामात्रधनयुक्ताः ।। 26 ।।
सुरभिकुसुमानुलेपनमणिवज्रविभूषणाम्बुरुहशय्याः।
वरतरुणयुवतिकामोपकरणमृष्टान्नमधुरभुजः ।। 27 ।।
उद्यानसलिलकामुकयशःसुखौदार्यरूपसम्पन्नाः।
विद्वदमात्यवणिग्जनघटकृच्चित्राण्डजास्त्रिफलाः ।। 28 ।।
कौशेयपट्टकम्बलपत्रौर्णिकरोध्रपत्रचोचानि।
जातीफलागुरुवचापिप्पल्यश्चन्दनं च भृगोः ।। 29 ।।

तक्षशिला नगरी, मार्तिकावत प्रदेश, बहुगिरि (दुर्गम पर्वत प्रदेश) गान्धार (कन्धार) पुष्कलावत, प्रस्थल, मालवा, कैकय, दशार्ण, उशीनर, शिबिदेश।

वितस्ता नदी (झेलम) के किनारे के प्रदेश, इरावती (रावी) के तट प्रदेश, चन्द्रभागा नदी (चिनाब) के तट प्रदेश, गाड़ी रथ आदि वाहन, चाँदी, खज़ाना, कोष, बैंक, मुद्रा प्रसार स्थान, हाथी, छोड़े, बड़े वाहनपति, धनाढ्य लोग।

सुगन्धपदार्थ, फूल, लेप, मालिश आदि के पदार्थ (मरहम, बाम आदि) मणियाँ (रत्न) हीरा, गहने, कमल, बिस्तर, सुन्दर कीमती पलंग व बिस्तर आदि, प्रधान पुरुष, जवान लड़के लड़कियाँ, सजने सँवरने व आकर्षक दिखने के सभी उपकरण, कोमल व कम खाने वाले लोग, मीठा पसन्द करने वाले लोग।

बाग बगीचे आदि मनोरंजक भ्रमण स्थान, पानी, विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण भावना, यशस्वी लोग, सुखी लोग, उदार मन वाले, सुन्दर लोग, विद्वान् मन्त्रि वर्ग, छोटे व मझोले व्यापारी (ट्रेडर्स) बर्तन बनाने वाले, अनेक प्रकार के पक्षी, त्रिफला (आयुर्वेदिक औषधि)।

रेशमी व चमकीले सुन्दर वस्त्र, कम्बल, कोमल व कीमती ऊन, रोध्र, तेजपात, नारियल, जातीफल (जायफल) अगर, बचा, पिप्पली, चन्दन ये सब पदार्थ शुक्र के आधीन हैं।

मार्तिकावत :

मालवा प्रान्त का भोजराज से सम्बन्धित स्थान। बनास नदी का निकटवर्ती स्थान।

पिप्पली :

पीपली या पीपल के नाम से मिलती है। गर्म तासीर है। इसके कई भेद हैं। पीपला मूल, गज पिप्पली, छोटी बड़ी पीपल आदि।

Scanned with CamScanner

वचा :

बच नाम से उपलब्ध है। रंग भेद से दूधिया बच या बच नाम हैं। प्रायः मस्तिष्क रोगों (मिर्गी) आदि की दवाओं के निर्माण में प्रयुक्त होती है।

रोध्र या लोध्र :

लोध व पठानी लोध के नाम से मिलता है। पिसने पर भूरा रंग (खाल जैसा), प्राचीन काल का शृंगार उपकरण, Face Powder की तरह इस्तेमाल किया जाता था।

शनि का कारकत्व :

आनर्तार्बुदपुष्करसौराष्ट्राभीरशूद्ररैवतकाः।
नष्टा यस्मिन् देशे सरस्वती पश्चिमो देशः।। 30।।
कुरुभूमिजाः प्रभासं विदिशा वेदस्मृती महीतटजाः।
खलमलिननीचतैलिकविहीनसत्त्वोपहतपुंस्त्वाः।। 31।।
बान्धनशाकुनिकाशुचिकैवर्तविरूपवृद्धसौकरिकाः।
गणपूज्यस्खलितव्रतशबरपुलिन्दार्यपरिहीनाः।। 32।।
कटुतिक्तरसायनविधवयोषितो भुजगतस्करमहिष्यः।
खरकरभचणकवातलनिष्पावाश्चार्कपुत्रस्य।। 33।।

आनतदिश, आर्बुद (आबू प्रदेश), पुष्कर, सौराष्ट्र आभीर, शूद्र, रैवतक पर्वत, सरस्वती नदी के लोप का स्थान विनशन (मरुभूमि) ये सब पश्चिमी प्रदेश।

कुरुक्षेत्र प्रदेश, प्रयाग तीर्थ स्थान, विदिशा, वेदस्मृती नदी, महीनदी के तीर प्रदेश। दुष्ट, दरिद्री, गन्दे रहने वाले लोग, तेल के व्यवसायी, आत्मबल व तेज से रहित लोग, पुरुषत्व में कमजोर लोग।

गिरफ्तार करने वाले लोग (पुलिस व जेलर आदि), पक्षियों के शिकारी व पालने वाले, अपवित्र कार्यों में रुचि लेने वाले, मल्लाह, बदसूरत लोग, बूढ़े लोग, सुअर पालने वाले लोग, मुखिया लोग, भ्रष्ट सन्यासी या नियम सन्यास आदि छोड़ देने वाले, शबर देश, पुलिन्द (उड़द, राजमा आदि) वालियों से उत्पन्न होने वाले मुलायम अनाज (चावल आदि)। इन सब पदार्थों पर शनि का आधिपत्य है।

Scanned with CamScanner

प्रभास तीर्थ :

श्रीकृष्ण ने जरा के तीर से अपनी लौकिक लीला इसी स्थान पर समाप्त की थी।

राहु का कारकत्व :

[illegible] म्लेच्छजातयः शूद्राः ।
[illegible] ।। 34 ।।
कुलपांसनहिंसकृतघ्नचौरनिःसत्यशौचवाचश्च ।
[illegible] नीचाः ।। 35 ।।
[illegible] सर्वे ।
[illegible] च सत्यकरा [illegible] ।। 36 ।।

[illegible] की चोटियाँ, [illegible] की कन्दराएँ, गुफावासी लोग, म्लेच्छ जातियाँ, शूद्र, वेदज्ञ का तिरस्कार करने वाले, शूलिक जनपद, नोक्काणदेश, अश्वमुख देश, विकलांग लोग।

कुल के विपरीत कर्म करने वाले, हिंसक लोग, अपकारी व कृतघ्न लोग, चोर, झूठे व बेईमान लोग, अशिष्ट आचार वाले, कंजूस लोग, गधे, गुप्तचर, कुश्ती करने वाले, अति क्रोधी स्वभाव वाले, घाटियों में रहने वाले, नीच लोग।

निन्दित व बदनाम लोग, झूठे धार्मिक, ढोंगी, राक्षस, खूब सोने वाले प्राणी, [illegible], [illegible] व तिल आदि ये सब पदार्थ राहु के आधिपत्य में हैं।

केतु का कारकत्व :

[illegible] चोलावगाणमरुचीनाः ।
[illegible] पराक्रमोपेताः ।। 37 ।।
[illegible] परान्त्रकुतूहला मदोत्सिक्ताः ।
[illegible] केतोः समाख्याताः ।। 38 ।।

[illegible] किले, [illegible] जनपद, गौरे लोग, हूण, चोल, अवगण स्थानीय लोग [illegible] प्रदेश, चीन देश, पहाड़ों की तलहटी में रहने वाले [illegible], [illegible] लोग, [illegible] कुशल लोग पराक्रमी लोग।

Scanned with CamScanner

दूसरे की स्त्रियों में अनुरक्त, मुकदमे बाज, दूसरों का दोष दर्शन करने वाले, मतवाले धर्मंडी लोग, मूर्ख, धर्मरहित, सदा जीवने की इच्छा वाले — ये सब पदार्थ केतु के आधीन हैं।

फल निर्देश का प्रकार :

उदयसमये यः स्निग्धांशुर्महान् प्रकृतिस्थितो
यदि च न हतो निर्घातोल्काराजोग्रहमर्दनैः।
स्वभवनगतः स्वोच्चप्राप्तः शुभग्रहवीक्षितः
स भवति शिवस्तेषां येषां प्रभुः परिकीर्तितः ।। 39 ।।

जो ग्रह अपने उदय के समय स्निग्ध रश्मियों वाला, बड़े बिम्ब वाला, स्वाभाविक आकार प्रकार वाला, ग्रहयुद्ध या उल्का से हत न हो, जो अपनी राशि में स्थित हो, अपने उच्च में हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो अपने कारकत्व के आधीन पदार्थों का कल्याण करता है।

अभिहितविपरीतलक्षणे क्षयमुपगच्छति तत्परिग्रहः।
डमरभयगदातुरा जना नरपतयश्च भवन्ति दुःखिताः ।। 40 ।।
यदि न रिपुकृतं भयं नृपाणां स्वसुतकृतं नियमादथात्मजं वा।
भवति जनपदस्य चाप्यवृष्ट्या गमनमपूर्वपुराद्रिनिम्नगासु ।। 41 ।।

जो ग्रह उक्त लक्षणों से हीन हो तो उसके पदार्थों की हानि होती है। उन लोगों में शस्त्र कोप व कलह तथा रोग होते हैं। भय व्याप्त होता है। तत्तद् देशों के अधिपतियों को कष्ट होता है।

यदि ऐसे लक्षण हों तो शत्रुओं से भय या भीतरी निजी लोगों (पुत्रादि) द्वारा भीतर घात होता है। सूखा पड़ता है तथा वहाँ के लोग सुरक्षित स्थानों पर भागने का प्रयत्न करते हैं।

इति श्रीमत्प्रमतिवराहमिहिराचार्यकृतायां बृहत्संहितायां पं. सुरेशमिश्रकृतेऽभिनव हिन्दीभाष्ये ग्रहभक्तियोगाध्यायः षोडशः ।। 16 ।।

Scanned with CamScanner